

डैनियल की पुस्तक - संख्या सत्तावन

प्रकाशितवाक्य के भविष्यसूचक रहस्यों का अनावरण: अंतकालीन भविष्यवाणियों की एक यात्रा

Jeff Pippenger

2024-01-21

सभी भविष्यद्वक्ता संसार के अंत के विषय में बोलते हैं, और सारी भविष्यवाणियाँ आकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलती और वहीं समाप्त होती हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वही धारा आगे बढ़ाई गई है जो दानियेल की पुस्तक में है, क्योंकि वे एक ही पुस्तक हैं। इन सभी भविष्यसूचक सिद्धांतों को पिछले लेखों में दृढ़तापूर्वक दर्ज किया गया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हमें बताया गया है कि अनुग्रहकाल के समाप्त होने से ठीक पहले एक मुहरबंद की गई भविष्यवाणी खोली जाती है। ये लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अब खोले जा रहे संदेश से संबंधित भविष्यसूचक तत्व प्रस्तुत करते आ रहे हैं। यह संदेश कोई एकमात्र भविष्यसूचक सत्य नहीं है, और संदेश के जो भी तत्व अब खोले जा रहे हैं, वे सब यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की परिधि में आते हैं।

संदेश की मुहर अनुग्रह-काल के समाप्त होने से ठीक पहले खोली जाती है, जब "समय निकट है।" दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें, भविष्यवाणी की आत्मा की रचनाओं की टीका-टिप्पणियों के साथ मिलकर, भविष्यसूचक संदेश की मुहर खोलने से जुड़ी प्रक्रिया के विषय में बहुत स्पष्ट हैं। मुहर खोलने का कार्य यहूदा के गोत्र का सिंह ही करता है, और जब वह ऐसा करता है तो संदेश प्रस्तुत करने के लिए एक सुव्यवस्थित विधि अपनाता है। वह पिता से संदेश प्राप्त करता है, जिन्हें बाइबल को थामे हुए दिखाया गया है, जिस पर सात मुहरें लगी हैं। यहूदा के गोत्र का सिंह, जो दाऊद की जड़ भी है और वध किया गया मेम्ना भी, पिता से उस पुस्तक को लेता है और उसकी मुहरें हटा देता है।

तब यीशु संदेश गब्रिएल को देते हैं, जो अन्य स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उस संदेश को एक नबी तक पहुँचाता है, जो उस संदेश को लिखता है और उसे कलीसियाओं को भेजता है। जब भविष्यसूचक संदेश की मुहर खोलने का समय आ जाता है, तो उस संदेश का खुलना एक तीन-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया उत्पन्न करता है, जो कलीसियाओं के भीतर उन लोगों की परीक्षा लेती है जो नबी के लेखन के लक्षित पाठक-वर्ग हैं; और कलीसिया-सदस्यों की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के आधार पर यह निर्धारित होता है कि वे दो वर्गों में से किस वर्ग में हैं। जो लोग उस खोले गए संदेश से उत्पन्न ज्ञान की वृद्धि को स्वीकार करते हैं, उन्हें "बुद्धिमान" पहचाना जाता है, और जो नहीं करते उन्हें दानियेल "दुष्ट," और मत्ती "मूर्ख" के रूप में पहचानते हैं।

अंतिम भविष्यसूचक रहस्य की मुहर खुलने से जुड़े ये सभी कारक प्रकाशितवाक्य सत्रह के पद नौ में संबोधित किए गए हैं और उन पर बल दिया गया है, क्योंकि उसमें यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के एक ऐसे तत्व की पहचान की गई है जो उपासकों की दो श्रेणियों की परीक्षा लेगा। यह ऐसा इस प्रकार करता है कि वह यह बताता है कि इस पद के चेतावनी संकेत के बाद आने वाले संदेश को 'बुद्धिमान' समझेंगे।

और यहाँ वह बुद्धि है जिसमें समझ है। वे सात सिर सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। और वे सात राजा हैं: पाँच गिर चुके हैं, और एक है, और दूसरा अभी तक नहीं आया; और जब वह आएगा, तो उसे थोड़े समय तक ठहरना अवश्य है। और वह पशु जो था, और नहीं है, वही आठवाँ है, और उन सातों में से है, और विनाश में जाता है। प्रकाशितवाक्य 17:9-11 ॥

"बुद्धि रखने वाला मन" "ज्ञानी" का मन है। "ज्ञानी" ज्ञान की वृद्धि को समझते हैं, और वह ज्ञान की वृद्धि, जो भविष्यसूचक चिन्ह के तुरंत बाद प्रस्तुत की जाती है—जो उस सत्य की पहचान कराती है जिसे ज्ञानी समझेंगे और दुष्ट अस्वीकार करेंगे—वह सत्य उन आगामी पदों में प्रस्तुत बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों से संबंधित है। वे पद बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों का अंतिम चित्रण प्रस्तुत करते हैं, और अंतिम दिनों में जो प्रकट किया जाता है,

वह यह है कि वे आठ राज्य दानिय्येल के दूसरे अध्याय में बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों के प्रथम चित्रण में भी दर्शाए गए हैं।

सत्य का अनावरण बाइबल की भविष्यवाणी में वर्णित राज्यों के बारे में उस सीमित दृष्टिकोण का समर्थन करता है, जो मिलर के रत्नों में से एक था, परन्तु वह दस गुना अधिक चमका, क्योंकि उसमें वह सत्य कहीं अधिक है जितना मिलराइटों ने अपने इतिहास के सीमित बिंदु से समझा था, और यह एक परीक्षा का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि संख्या 'दस' द्वारा, और 'यहाँ वह मन है जिसमें बुद्धि है' नामक प्रारंभिक चेतावनी के प्रकाशस्तंभ द्वारा दर्शाया गया है; जिसका भविष्यसूचक अर्थ यह है कि आगामी सत्य उन कलीसियाओं की परीक्षा करेगा जिन्हें वह संदेश भेजा जाता है जिसकी मुहर परिवीक्षा के समापन से ठीक पहले खोली जाती है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय सत्रह में यूहन्ना को पोपकालीन अंधकार के बारह सौ साठ वर्षों की मरुभूमि में ले जाया गया। उसे उस अवधि के बिलकुल अंत, 1798 में, रखा गया, जो ठीक वही ऐतिहासिक समय है जहाँ उसे प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह में भी रखा गया था।

और मैं समुद्र के किनारे की रेत पर खड़ा हुआ, और समुद्र से एक पशु को ऊपर उठते देखा, जिसके सात सिर और दस सींग थे; उसके सींगों पर दस मुकुट थे, और उसके सिरों पर निन्दा का नाम था। प्रकाशितवाक्य 13:1.

"समुद्र की रेत" 1798 का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि यह वह ऐतिहासिक दृष्टिबिंदु दिखाती है जहाँ यूहन्ना को भूतकाल में पोपाई सत्ता (समुद्र का पशु) दिखाई गई, और संयुक्त राज्य (पृथ्वी का पशु) का उदय दिखाया गया, जो अंततः शीघ्र आने वाले रविवार के क्रानून के समय अजगर के समान बोलेगा। तब पृथ्वी का पशु संसार को "पशु की प्रतिमा" को स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है, जो बोलेगी और पूरे संसार पर रविवार का क्रानून लागू करेगी।

"जब पोप की सत्ता की शक्ति छीन ली गई और वह उत्पीड़न करना छोड़ने के लिए विवश हो गई, तब जॉन ने देखा कि एक नई शक्ति उभर रही थी, जो ड्रैगन की आवाज़ की प्रतिध्वनि करने और उसी क्रूर व धर्मनिंदक कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उभर रही थी। यह शक्ति, जो कलीसिया और परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करने वाली अंतिम शक्ति है, मेमने जैसे सींगों वाले एक पशु द्वारा दर्शाई गई है। इससे पहले के पशु समुद्र से उठे थे; परन्तु यह पृथ्वी से निकला, उस राष्ट्र के शांतिपूर्ण उदय का प्रतिनिधित्व करते हुए जिसका यह प्रतीक था—संयुक्त राज्य अमेरिका।" Signs of the Times, 8 फरवरी, 1910.

जॉन को इतिहास के उसी दृष्टिबिंदु पर ले जाया जाता है ताकि सत्रहवें अध्याय में बाइबल की भविष्यवाणियों के राज्यों की अंतिम प्रस्तुति प्राप्त कर सके। उस दृष्टिबिंदु पर, राज्यों को प्रस्तुत किया जाता है। उसे पहले सूचित किया जाता है कि पशु चर्च और राज्य दोनों को नियंत्रित करता है, क्योंकि वह केवल सात सिरों पर ही नहीं, बल्कि सात पहाड़ों पर भी बैठी है। महान वेश्या का आसन यह दर्शाता है कि वही पशु पर सवार है, और जो पशु पर सवार होता है वही पशु को नियंत्रित करता है।

और वह स्त्री जिसे तू ने देखा, वही महान नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करती है। प्रकाशितवाक्य 17:18.

"reigneth" शब्द का अर्थ पकड़ना और शासन करना है। एक सवार लगाम पकड़कर पशु पर शासन करता है। पापाई सत्ता सात सिरों और सात पहाड़ों पर भी शासन करती है। दानिय्येल के दूसरे अध्याय में, दानिय्येल नबूकदनेस्सर को बताता है कि वह सोने का "सिर" है। यशायाह के सातवें अध्याय में "सिर" को एक राजा, एक राजधानी या एक राज्य भी कहा गया है।

क्योंकि सीरिया का सिर दमिश्क है, और दमिश्क का सिर रेसिन है; और पैसठ वर्ष के भीतर इफ्राईम चूर-चूर कर दिया जाएगा ताकि वह अब कोई जाति न रहे। और इफ्राईम का सिर सामरिया है, और सामरिया का सिर रेमल्याह का पुत्र है। यदि तुम विश्वास न करोगे, तो तुम स्थिर न रहोगे। यशायाह 7:7, 8.

पोपशाही, जो पशु पर सवार स्त्री है, पृथ्वी के सभी राजाओं पर शासन करती है। उन राजाओं को "दस राजा" के रूप में दर्शाया गया है, जो अंतिम दिनों की अजगर की शक्ति हैं। वे वही राजा हैं जिनके साथ टायर की वेश्या व्यभिचार करती है। वे "दस राजा" पोपशाही के अधिकार को स्वीकार करने के लिए मजबूर किए गए हैं, परंतु उन दस राजाओं में प्रमुख राजा संयुक्त राज्य अमेरिका है। इसलिए संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतिनिधित्व भी अहाब करता है, जो इस्राएल के उत्तरी दस राज्यों का राजा था। संख्या "सात" "पूर्णता" का प्रतीक है, और जब पोपशाही को पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करती हुई दिखाया जाता है, तब वह दस राजाओं पर भी राज्य करती है और वह सात सिरों पर विराजमान होती है।

यह वह मन है जिसमें बुद्धि है, क्योंकि अंतिम दिनों के बुद्धिमान लोग 'रेखा पर रेखा' की पद्धति का प्रयोग करते हैं, और वे पहचानते हैं कि उस राजसत्ता के प्रत्येक प्रतीक, जिस पर वह व्यभिचारिणी शासन करती है, एक ही सत्य को दर्शाते हैं। वह सात पर्वतों पर भी शासन करती है, और मिलेराइटों ने बाइबल की भविष्यवाणी में 'पर्वत' को एक राज्य के प्रतीक के रूप में पहचाना था, पर उन्होंने यह भी पहचाना कि प्रतीकों के एक से अधिक अर्थ होते हैं।

पर्वत भी कलीसिया के प्रतीक हैं। पवित्र शास्त्रों में "महिमामय पवित्र पर्वत" परमेश्वर की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है।

यूदाह और यरूशलेम के विषय में आमोज़ के पुत्र यशायाह ने जो दर्शन देखा। और अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत पर्वतों की चोटी पर स्थापित किया जाएगा और पहाड़ियों से ऊपर ऊँचा किया जाएगा, और सब जातियाँ उसकी ओर आएँगी। और बहुत से लोग आएँगे और कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के भवन में चढ़ें; वह हमें अपनी राहें सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे, क्योंकि सिय्योन से व्यवस्था निकलेगी और यरूशलेम से यहोवा का वचन। यशायाह 2:1-3.

"प्रभु का घर" उसकी कलीसिया है, और वह एक "पर्वत" है। महान व्यभिचारिणी सात पर्वतों पर बैठी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वह जैसे सभी राजाओं पर शासन करती है, वैसे ही सभी कलीसियाओं पर भी शासन करती है। वह समस्त संसार की सभी कलीसियाओं और सभी राज्यों पर नियंत्रण रखती है।

यशायाह जिस दर्शन का उल्लेख कर रहे हैं, जो उन्हें 'यहूदा और यरूशलेम के विषय में' मिला था, जिसे हमने अभी उद्धृत किया, वह आगे भी चलता है, और अध्याय चार में भी वही खंड बना रहता है; और यशायाह के अनुसार वही 'उसी दिन' है जब लोग कहते हैं, 'आओ, हम यहोवा के पर्वत पर, याकूब के परमेश्वर के भवन में चलें।' उसी काल में 'सात स्त्रियों' का भी उल्लेख होता है।

और उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी, हम अपनी रोटी खाएँगी और अपने वस्त्र पहनेंगी; बस हमें तेरे नाम से कहलाने दे, ताकि हमारी लज्जा दूर हो जाए। उस दिन यहोवा की शाखा शोभायुक्त और महिमामयी होगी, और पृथ्वी का फल इस्राएल के बच्चे हुए लोगों के लिए उत्तम और सुन्दर होगा। और ऐसा होगा कि सिय्योन में जो बचा रह जाएगा, और यरूशलेम में जो शेष रहेगा, वह पवित्र कहलाएगा—यहाँ तक कि यरूशलेम में जीवितों में लिखा हुआ प्रत्येक व्यक्ति। जब यहोवा सिय्योन की पुत्रियों की मैल धो देगा और न्याय की आत्मा तथा दहकने की आत्मा से यरूशलेम का रक्त उसके मध्य से शुद्ध कर देगा। और यहोवा सिय्योन पर्वत के हर निवास स्थान और उसकी सभाओं पर दिन में बादल और धुआँ, और रात को जलती हुई आग की चमक उत्पन्न करेगा; क्योंकि सारी महिमा के ऊपर एक आवरण होगा। और वह एक तंबू होगा जो दिन में तपन से छाया दे, और शरणस्थान बने, तथा आंधी और वर्षा से बचाने का आश्रय। यशायाह 4:1-6.

वह "दिन" जो यशायाह के दर्शन का विषय है, प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह के महान भूकंप की "घड़ी" है। जिन बुद्धिमानों ने 18 जुलाई, 2020 की निराशा से "लौटने" की चेतावनी को स्वीकार किया है, और लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस की आवश्यकताओं को पूरा किया है, तथा जिन्हें यहजेकेल की पहली भविष्यवाणी द्वारा एकत्र किया गया है, वे तब मुहरबंद किए जाते हैं जब वे इस्लाम की चार पवनों के विषय में यहजेकेल का दूसरा संदेश स्वीकार करते हैं। तब उन्हें एक निशान के रूप में स्वर्ग में उठाया जाता है, और बाबुल में परमेश्वर के अन्य बच्चे उस बुलाहट का उत्तर

देना शुरू करते हैं कि वे बाबुल से बाहर निकलें, जो भूकंप से आरंभ होती है—वह भूकंप जो शीघ्र आने वाला रविवार का कानून है। परमेश्वर की अन्य भेड़ें बाबुल से बाहर आने का संदेश सुनती हैं, और वे घोषणा करती हैं, "आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़ें, और याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ।"

उस 'घड़ी' में महान व्यभिचारिणी अपने गीत गाना शुरू करती है और पृथ्वी के राजाओं के साथ व्यभिचार करती है। जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं हैं, वे उस व्यभिचारिणी का अनुसरण करते हैं, और उनकी कलीसियाएँ उसके अधिकार के अधीन आ जाती हैं। उन कलीसियाओं को यशायाह ने 'सात स्त्रियों' के रूप में प्रस्तुत किया है। वे 'सात स्त्रियाँ' वही 'सात पर्वत' हैं, जिन पर पापसी शासन करेगी, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका समूचे विश्व को उस पशु की प्रतिमा स्थापित करने के लिए बाध्य करेगा, जो बोलेगी भी और सबको पापसी अधिकार का चिन्ह ग्रहण करने के लिए विवश भी करेगी।

वे "सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़ लेंगी," और वह "पुरुष" वही है जिसे पौलुस "पाप का मनुष्य" के रूप में पहचानता है। उस परीक्षा के काल में जो "यरूशलेम में" रहेंगे, वे पवित्र कहलाएँगे, यहाँ तक कि हर एक जो यरूशलेम में जीवितों में लिखा हुआ पाया जाए। परमेश्वर के लोग वे हैं जिनके नाम उस काल में जीवन की पुस्तक में लिखे हैं—उस मेमने की पुस्तक में जो जगत की उत्पत्ति से वध किया गया। दूसरी श्रेणी, जो "पाप के मनुष्य" को पकड़ती है, वही है जो प्रकाशितवाक्य के तेरहवें अध्याय में पाप के मनुष्य की उपासना करती है।

और पृथ्वी पर रहने वाले सब के सब, जिनके नाम जगत की नींव रखे जाने से वध किए गए मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हुए नहीं हैं, उसकी आराधना करेंगे। जिसके कान हों, वह सुने। प्रकाशितवाक्य 13:8, 9.

बड़े भूकम्प की "घड़ी", जो रविवार-कानून का संकट है, अन्वेषणात्मक न्याय का समापन है; और यह न्याय इस बात पर आधारित है कि तुम्हारा नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज पाया जाता है या नहीं। इसलिए उस समय, जीवन की पुस्तक से संबंध द्वारा निरूपित दो वर्ग न्याय के बिलकुल अंतिम दृश्यों की पहचान कराते हैं। जो लोग "पाप का मनुष्य" थाम लेते हैं, वे यह घोषित करते हैं कि वे "खाएँगे" अपनी "रोटी, और पहनेंगे" अपने "वस्त्र," पर उनकी प्राथमिक इच्छा यह है कि वे "तेरे नाम से कहलाएँ".

वे अपने विश्वास का सिद्धान्तगत वक्तव्य (अपनी ही रोटी खाना) और अपने संप्रदायगत अंगीकार (अपना ही वस्त्र) को बनाए रखेंगे, परन्तु "पाप के मनुष्य" का नाम स्वीकार करेंगे। "पाप के मनुष्य" का नाम "कैथोलिक" है, जिसका अर्थ "सार्वभौमिक" होता है। जो लोग "पाप के मनुष्य" को थाम लेते हैं, वे "सार्वभौमिक कलीसिया" का भाग बनना चाहते हैं, जो कि कैथोलिक कलीसिया है। वे उस संबंध की इच्छा इसीलिए करते हैं ताकि अपनी "निन्दा" को "दूर कर" सकें।

यह "भर्त्सना" उस पशु के दो महत्वपूर्ण तत्वों को संबोधित करती है जो अंतिम दिनों में सभी कलीसियाओं और सभी राष्ट्रों पर शासन करता है। प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में "महान भूकंप की घड़ी" में, "तीसरा हाथ शीघ्र आता है"। "तीसरा हाथ" इस्लाम है। प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में "महान भूकंप की घड़ी" में, सातवीं तुरही बजती है। सातवीं तुरही इस्लाम है। "महान भूकंप की घड़ी" में इस्लाम प्रहार करता है, क्योंकि सारी तुरहियाँ वे भविष्यसूचक साधन हैं जिनका उपयोग परमेश्वर ने समस्त विश्व इतिहास में बलपूर्वक रविवार की आराधना पर न्याय करने के लिए किया है।

जब संयुक्त राज्य अमेरिका का 'राष्ट्रीय पतन' शीघ्र आने वाले रविवार कानून के समय लाया जाएगा, तब 'राष्ट्र क्रोधित होंगे।' बाइबल की भविष्यवाणी में राष्ट्रों को क्रोधित करने वाला इस्लाम ही है, जैसा कि उत्पत्ति की पुस्तक में इस्लाम के प्रथम संदर्भ से दर्शाया गया है।

और यहोवा के दूत ने उससे कहा, देख, तू गर्भवती है, और एक पुत्र उत्पन्न करेगी, और उसका नाम इश्माएल रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख को सुन लिया है। वह वनगधे के समान मनुष्य होगा; उसका हाथ सब मनुष्यों के विरुद्ध होगा, और सब मनुष्यों का हाथ उसके विरुद्ध होगा; और वह अपने सब भाइयों के साम्हने निवास

करेगा। उत्पत्ति 16:11, 12.

अंतिम दिनों का 'कलंक' इस्लाम धर्म है। दुनिया की कलीसियाएँ और राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र की नई विश्व व्यवस्था के अधिकार के अधीन आ जाएँगे, जिसका शासन कैथोलिक कलीसिया के हाथ में होगा। पोप को एक विश्व प्रणाली के सिंहासन पर बैठाया जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे कॉन्स्टेंटाइन ने वर्ष 330 में पापाई सत्ता को उसका सिंहासन दिया था। राष्ट्र यह ठहराएँगे कि मानवता के विरुद्ध इस्लाम द्वारा लाई जा रही युद्धस्थिति से निपटना केवल एक संयुक्त प्रयास से ही संभव है, जिसके लिए किसी नैतिक प्राधिकार के अधीन होना पड़ेगा, और संयुक्त राज्य अमेरिका यह आग्रह करेगा कि वह रोमन कलीसिया ही है। जैसे जस्टिनियन ने वर्ष 533 में कैथोलिक कलीसिया को उसकी महान सत्ता दी थी, वैसे ही इतिहास फिर दोहराया जाएगा। संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी सैन्य शक्ति के बल पर संसार को आज्ञा मानने के लिए बाध्य करेगा, जैसे क्लोविस ने वर्ष 496 में कैथोलिक कलीसिया के लिए किया था। प्रकाशितवाक्य तेरह की दूसरी आयत का इतिहास फिर दोहराया जाएगा।

और जो पशु मैंने देखा वह चीते के समान था, और उसके पाँव भालू के पाँवों के समान थे, और उसका मुँह सिंह के मुँह के समान था; और अजगर ने उसे अपनी शक्ति, अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार दिया।
प्रकाशितवाक्य 13:2.

एक बार प्रतिमा स्थापित हो जाने पर, पृथ्वी के वे राजा, जो इस्लाम के हमलों से क्रोधित हो उठे हैं, यह समझेंगे कि इस्लाम के विरुद्ध जो सार्वभौमिक 'निन्दा' का उपयोग पशु की विश्वव्यापी प्रतिमा को अस्तित्व में लाने के लिए किया गया था, वह वह 'निन्दा' नहीं थी जिसके बारे में 'पाप का मनुष्य' (ईज़ेबेल) वास्तव में चिंतित थी। तब तक बहुत देर हो चुकी होगी; संसार जान जाएगा कि ईज़ेबेल को इस्लाम से कोई सरोकार नहीं, बल्कि उसके हृदय की इच्छा एलिय्याह को मार डालने की है, जैसे हेरोदिया ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को मार डाला था।

"जिसमें बुद्धि है" वाला "मन" ही "ज्ञानी का मन" है; और "ज्ञानी" वे हैं जो उस "ज्ञान की वृद्धि" को समझते हैं, जो तब उत्पन्न होती है जब यहूदा के गोत्र का सिंह, अनुग्रह का काल समाप्त होने से ठीक पहले, यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहरें खोलता है।

और उसने मुझसे कहा, "इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातों पर मुहर न लगा; क्योंकि समय निकट है। जो अधर्मी है, वह अधर्मी ही बना रहे; और जो अशुद्ध है, वह अशुद्ध ही बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी ही बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र ही बना रहे।" प्रकाशितवाक्य 22:10, 11

'सात सिर सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है' यह सत्य दर्शाता है कि पोप-तंत्र चर्च और राज्य दोनों पर शासन करेगा। प्रतीकों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, और जिन अंशों में वे प्रस्तुत किए गए हैं, उनके संदर्भ द्वारा ही प्रतीकों को परिभाषित और समझा जाना चाहिए। यह आपत्ति उठती है कि पद तो बताता है कि सिर ही पहाड़ हैं; तो सिर (राज्यशासन) और पहाड़ (चर्चशासन) के बीच भेद करने का औचित्य क्या है? यह भेद दानिएल की पुस्तक के अध्याय सात और आठ में स्थापित किया गया है। अध्याय सात में, मूर्तिपूजक रोम और पोप-शासित रोम दोनों को उनसे पहले आने वाले पशुओं से 'भिन्न' बताया गया है।

जब अध्याय सात को अध्याय आठ पर (पंक्ति पर पंक्ति) रखकर देखा जाता है, तो हम अध्याय आठ में रोम के छोटे सींग को पुरुष और स्त्री के बीच डोलते हुए—पुरुष, स्त्री, पुरुष, स्त्री—पाते हैं। एक प्रतीक (छोटा सींग) जो दो शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। उन अध्यायों में, सींग एक राज्य है, और राज्य एक सिर भी है। अध्याय आठ में, छोटा सींग दो राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है—बाइबिल की भविष्यवाणी के चौथे और पाँचवें राज्य का। छोटा सींग प्रतीकात्मक रूप से दो राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है, और वे दो राज्य राजसत्ता और धर्मसत्ता के गठजोड़ को दर्शाते हैं। वे सात सिर, जो सात पहाड़ भी हैं, दो राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उनमें से एक राज्य धर्मसत्ता है और दूसरा राजसत्ता।

दानियेल के दूसरे अध्याय में इस भविष्यसूचक प्रतीकवाद का एक और साक्षी मिलता है, क्योंकि वहाँ अंतिम राज्य, जिसे मिलरवादियों ने रोम के चौथे राज्य के रूप में समझा, लोहा और मिट्टी द्वारा दर्शाया गया है। लोहा और मिट्टी को एक साथ मिला हुआ दिखाया गया है, जबकि वास्तविकता में लोहा मिट्टी के साथ नहीं मिलता। फिर भी जब बहन व्हाइट “लोहा और मिट्टी” पर टिप्पणी करती हैं, तो वह इसे कलीसियाई सत्ता और राजकीय सत्ता का प्रतीक बताती हैं, जैसा कि अध्याय आठ के छोटे सींग और प्रकाशितवाक्य सत्रह के उन सिरोँ द्वारा भी दर्शाया गया है, जो पहाड़ भी हैं।

हम ऐसे समय पर पहुँच गए हैं जब परमेश्वर के पवित्र कार्य का चित्रण उस प्रतिमा के उन पाँवों से होता है जिनमें लोहा कीचड़युक्त मिट्टी के साथ मिला हुआ था। परमेश्वर की एक प्रजा है, एक चुनी हुई प्रजा—उनका विवेक पवित्र किया जाना चाहिए; उन्हें नींव पर लकड़ी, घास और फूस रखकर अपवित्र नहीं होना चाहिए। जो कोई भी परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निष्ठावान है, वह देखेगा कि हमारे विश्वास की विशिष्ट पहचान सातवें दिन का सब्त है। यदि सरकार सब्त का आदर करे जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी है, तो वह परमेश्वर की सामर्थ्य में स्थिर रहेगी और उस विश्वास की रक्षा में खड़ी रहेगी जो एक बार संतों को सौंपा गया था। परन्तु राजनेता नकली सब्त का समर्थन करेंगे और पापसी की इस संतान के पालन के साथ अपने धार्मिक विश्वास को मिला देंगे, उसे उस सब्त से ऊपर रखेंगे जिसे प्रभु ने पवित्र ठहराया और आशीष दी, और जिसे मनुष्य के लिए पवित्र मानकर रखने को अलग ठहराया—जो उसके और उसकी प्रजा के बीच हजार पीढ़ियों तक एक चिन्ह है। कलीसिया और राज्य की कूटनीति का यह मेल लोहे और मिट्टी द्वारा दर्शाया गया है। यह संधि कलीसियाओं की सारी शक्ति को निर्बल कर रही है। कलीसिया को राज्य की शक्ति से सुसज्जित करना बुरे परिणाम लाएगा। मनुष्य लगभग परमेश्वर की सहनशीलता की सीमा पार कर चुके हैं। उन्होंने अपनी शक्ति राजनीति में लगा दी है, और पापसी के साथ मिल गए हैं। परन्तु समय आएगा जब परमेश्वर उन लोगों को दंड देगा जिन्होंने उसकी व्यवस्था को निष्फल कर दिया है, और उनका दुष्कर्म उन्हीं पर पलट पड़ेगा। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 4, 1168, 1169.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

हमारे लिए मसीह के कार्य और हमारे विरुद्ध शैतान के दृढ़तापूर्वक लगाए गए अभियोग को प्रदर्शित करने वाले दृश्य में, यहोशू महायाजक के रूप में खड़ा है और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाली प्रजा की ओर से विनती करता है। उसी समय शैतान परमेश्वर की प्रजा को घोर पापियों के रूप में प्रस्तुत करता है, और उनके जीवनभर जिन पापों के लिए उसने उन्हें करने को उकसाया है, उनकी सूची परमेश्वर के सामने रखता है, और आग्रह करता है कि उनके अपराधों के कारण उन्हें नाश करने के लिए उसके हाथों में सौंप दिया जाए। वह यह भी आग्रह करता है कि दुष्टता के गठबंधन के विरुद्ध सेवा करने वाले स्वर्गदूत उन्हें सुरक्षा न दें। वह क्रोध से भरा है, क्योंकि वह परमेश्वर की प्रजा को संसार के साथ गट्टरों में बाँधकर अपने प्रति पूर्ण निष्ठा दिला नहीं सकता। राजा, शासक और राज्यपालों ने अपने ऊपर विरोधी-मसीह की छाप लगा ली है, और उन्हें उस अजगर के रूप में चित्रित किया गया है जो पवित्र जनों—जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर विश्वास रखते हैं—से युद्ध करने को निकलता है। परमेश्वर की प्रजा के प्रति अपनी शत्रुता में, वे यह भी दिखाते हैं कि वे मसीह के स्थान पर बरब्बा को चुनने के दोषी हैं।

परमेश्वर का संसार के साथ विवाद है। जब न्याय का दरबार बैठेगा और पुस्तकें खोली जाएँगी, तो उसे एक भयानक हिसाब निपटाना है, जो अभी ही संसार को भयभीत कर दे और काँप उठा दे, यदि लोग शैतानी भ्रमों और छल से अंधे और मोहित न किए गए होते। परमेश्वर अपने एकलौते पुत्र की मृत्यु का हिसाब संसार से लेगा, जिसे वास्तव में संसार ने फिर से क्रूस पर चढ़ाया है, और उसके लोगों के उत्पीड़न में उसे खुलेआम लज्जित किया है। संसार ने उसके संतों के रूप में मसीह को अस्वीकार किया है, भविष्यद्वक्ताओं, प्रेरितों और दूतों के संदेशों को अस्वीकार करके उसके संदेशों को ठुकराया है। उन्होंने उन लोगों को ठुकराया है जो मसीह के सहकर्मी रहे हैं, और इसके लिए उन्हें हिसाब देना होगा। मंत्रियों के लिए साक्ष्य, 38, 39.